भारत में दलित के आर्थिक विकास में भूमंडलीकरण युग का प्रभाव (बिहार के संदर्भ में)

डॉ0 प्रभा कुमारी

दलित शब्द एक इतिहास है, पर यह शब्द अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजातियों के लिये उपयोग में लाया गया है, जहाँ अत्यंत पिछड़ों के लिये ब्रिटिश सरकार ने अनुसूचित जनजाति एवं अनुसूचित जाति दिया था। पर दलित शब्द सदियों से कुचला हुआ, पीड़ित, दासों, पराधीनों इत्यादि शब्द का मतलब है। दलित शब्द सबसे सटिक एवं सम्मानित शब्द है, जो लेखकों के द्वारा दिया गया है। पहले समाज में जो पद्दलित हुआ करते थे वही दलित है जिसके लिये इतिहास साक्षी है। भारतीय समाज में जाति–व्यवस्था के कारण दलित शब्द से वे अपने भूत को झाँकने की ओर अग्रसर होते हैं।

भारतीय अर्थव्यवस्था में दलित आज भी एक पतली परत जैसी है। आज प्राइवेट कंपनियों में नौकरी तभी मिल सकती है जब दलितों को गुणात्मक शिक्षा दिया जाये। वे लोग जैसे धोबी का काम कपड़े धोना मेहतर जाति का काम नाले–लैटिन की साफ–सफाई का काम करना, कुम्हार का काम मिट्टी के बर्त्तन बनाना तथा मोची का काम चमड़े के समान बनाना इत्यादि इन जातियों के रोजगार–वर्धन के तरीके हैं जो पुस्त–दर–पुस्त चले आ रहे हैं। लेकिन वर्त्तमान भूमंडलीकरण के इस युग में इन जातियों के जातिगत धंधे–धीमी गति से चल रहे हैं। इस कारण से भी उनकी सामाजिक–आर्थिक स्थिति नहीं सुधर रही है। तब प्रश्न उठता है कि भूमंडलीकरण के दलितों को अपनी स्थिति सुधारने का मौका नहीं मिल पा रहा है। इसका लाभ लेने के लिये दलितों में गुणात्मक शिक्षा सुधार जरूरी है तभी प्राइवेट कंपनियों में दिलितों की भागीदारी हो सकेगी।